क्या दो दुष्टात्मा-ग्रस्त व्यक्तियों की कहानी भ्रमित
करती है?

प्रश्न:
क्या बाइबिल मरकुस 5:1–6 और मत्ती 8:28–31 में स्वयं का विरोध करती है? दोनों वर्णन एक ही घटना को दर्शाते हैं — जहाँ यीशु दुष्टात्माओं को निकालते हैं — लेकिन विवरणों में थोड़ा अंतर है। मरकुस एक व्यक्ति का उल्लेख करता है, जबकि मत्ती दो व्यक्तियों का। क्या यह विरोधाभास है?

उत्तर:
आइए पहले दोनों विवरणों को ध्यान से पढ़ते हैं:

मरकुस 5:1–7 (ERV-HI):

1 फिर वे झील के पार गेरासेनियों के इलाके में पहुँचे।
2 जब यीशु नाव से उतरे, तो एक मनुष्य, जिसमें दुष्ट आत्मा थी, कब्रों में से आकर उनसे मिला…
6 जब उसने यीशु को दूर से देखा, तो वह दौड़ कर आया और उसके सामने झुक गया।

मत्ती 8:28–31 (ERV-HI):

क्या दो दुष्टात्मा-ग्रस्त व्यक्तियों की कहानी भ्रमित
करती है?

28 जब यीशु झील के पार गदरियों के इलाके में पहुँचे, तो दो दुष्टात्मा-ग्रस्त लोग कब्रों में से निकल कर उनके सामने आ गये। वे इतने उग्र थे कि उस मार्ग से कोई जा नहीं सकता था।

क्या यह विरोधाभास है?
बिलकुल नहीं। अंतर सच्चाई में नहीं, बल्कि दृष्टिकोण में है।

मरकुस (और लूका 8:26–33 भी) उस व्यक्ति पर केंद्रित है जो अधिक प्रमुख था — वही व्यक्ति यीशु के पास दौड़ कर गया, उससे बात की और पूरी बातचीत का केंद्र बन गया। जबकि मत्ती हमें एक व्यापक चित्र देता है और स्पष्ट करता है कि वहाँ वास्तव में दो दुष्टात्मा-ग्रस्त लोग थे।

यह सामान्य बात है जब प्रत्यक्षदर्शी किसी घटना को बयान करते हैं। कुछ लोग उस व्यक्ति या घटक पर ज़ोर देते हैं जो सबसे प्रभावशाली था, जबकि अन्य पूरे परिदृश्य को चित्रित करते हैं।

एक व्यावहारिक उदाहरण:
मान लीजिए कि आप और आपका मित्र किसी इंटरव्यू के लिए जाते हैं। प्रवेश द्वार पर एक गार्ड आपको रोकता है और आपकी जाँच करता है। पास में एक और गार्ड खड़ा होता है, पर वह कुछ नहीं कहता।

क्या दो दुष्टात्मा-ग्रस्त व्यक्तियों की कहानी भ्रमित
करती है?

बाद में आप कहते हैं: “एक गार्ड ने हमें रोका।”
आपका मित्र कहता है: “वहाँ गार्ड थे जिन्होंने हमें रोका।”

क्या कोई झूठ बोल रहा है? नहीं। दोनों ने एक ही घटना को अपने दृष्टिकोण से बताया। एक ने मुख्य किरदार पर ध्यान दिया, दूसरे ने पूरा संदर्भ साझा किया। यही सिद्धांत सुसमाचार के विवरणों पर भी लागू होता है।

आध्यात्मिक दृष्टिकोण:
यह उदाहरण यह भी सिखाता है कि बाइबिल सत्य को कैसे प्रकट करती है:

सुसमाचार लेखक एक-दूसरे की नकल नहीं कर रहे थे, बल्कि पवित्र आत्मा से प्रेरित होकर वास्तविक घटनाओं की गवाही दे रहे थे:

2 तीमुथियुस 3:16:
“हर एक शास्त्र जो परमेश्वर की प्रेरणा से लिखा गया है, शिक्षा, उलाहना, सुधार और धार्मिकता में प्रशिक्षण के लिए लाभदायक है।”

हर लेखक की अपनी अनूठी शैली और ज़ोर है, जो हमें घटनाओं की पूरी

क्या दो दुष्टात्मा-ग्रस्त व्यक्तियों की कहानी भ्रमित
करती है?

तस्वीर देता है।

विवरणों में विविधता यह प्रमाणित करती है कि ये आँखोंदेखे साक्षी हैं, न कि रटे-रटाए वाक्य। यदि हर विवरण शब्दशः एक जैसा होता, तो यह उनकी सच्चाई पर ही सवाल खड़ा करता।

मरकुस संभवतः उस व्यक्ति को उजागर करता है जिसकी मुक्ति सबसे प्रभावशाली थी — जिसने दौड़ कर यीशु को दंडवत किया:

मरकुस 5:6:
“जब उसने यीशु को दूर से देखा, तो वह दौड़ कर आया और उसके
सामने झुक गया।”

इससे यह भी स्पष्ट होता है कि यीशु की दुष्टात्माओं पर कैसी प्रभुता थी। वहीं मत्ती संख्या को स्पष्टता के लिए बताता है — वहाँ वास्तव में दो लोग थे।

मरकुस 5:9 में यीशु दुष्टात्मा से उसका नाम पूछते हैं:

मरकुस 5:9:

क्या दो दुष्टात्मा-ग्रस्त व्यक्तियों की कहानी भ्रमित
करती है?

“यीशु ने उससे पूछा, ‘तेरा नाम क्या है?’ उसने उत्तर दिया,
‘मेरा नाम लीजन है, क्योंकि हम बहुत हैं।’”

यह दर्शाता है कि वह व्यक्ति गहराई से दुष्टात्माओं के अधिकार में था — “लीजन” शब्द हज़ारों को सूचित करता है।

यह पुष्टि करता है कि मुख्य बात यह नहीं है कि कितने लोग दुष्टात्मा-ग्रस्त थे, बल्कि यह कि यीशु का अधिकार कितनी शक्तिशाली आत्माओं पर भी पूर्ण है।

कुलुस्सियों 2:15:
“उसने प्रधानताओं और अधिकारों को अपने ऊपर से उतार कर उनका खुला प्रदर्शन किया और क्रूस के द्वारा उन पर जय प्राप्त की।”

निष्कर्ष:
मत्ती और मरकुस के विवरण में कोई विरोधाभास नहीं है। दोनों सत्य हैं — एक ने दो व्यक्तियों का उल्लेख किया, दूसरे ने प्रमुख व्यक्ति पर ध्यान केंद्रित किया।

क्या दो दुष्टात्मा-ग्रस्त व्यक्तियों की कहानी भ्रमित
करती है?

दोनों विवरणों को मिलाकर हमें यीशु मसीह की दुष्टात्माओं पर परम प्रभुता का एक जीवंत और पूर्ण चित्र मिलता है।

यह खंड न केवल बाइबिल के सामंजस्य को उजागर करता है, बल्कि इस केंद्रीय सत्य की ओर इशारा करता है:

मत्ती 28:18:
“स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है।”

यीशु सभी आत्मिक शक्तियों के ऊपर प्रभु हैं — और कोई भी अंधकार की शक्ति उनके सामने टिक नहीं सकती।
प्रभु आपको आशीष दें जब आप उसके वचन को और गहराई से समझने का प्रयास करें।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp